प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंदजी सरस्वती दण्डीस्वामी जी

विषय तालिका

CD # 06 *SEP-OCT 2006 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	05.09.06	48				क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं, क्षेत्र असत् जड़ दुःखरूप माया व क्षेत्रज्ञ सच्चिदानंद रूप ब्रह्म है, यही संपूर्ण ज्ञान है	
2	06.09.06	42				ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैःव न परा	
3	07.09.06	50				अज्ञानरूपी निद्रा कारण माया व स्व०जा०माया का कार्य है,माया रूपी कोयले का भस्मिकरण ज्ञानाग्नि से ही संभवहै	
4	07.09.06 [P]	31				अध्यात्म रामायण-प्रथम सर्ग, शिव-पार्वती संवाद, निद्रा माया है एवं स्वप्न जागृत उसका परिवार है	
5	08.09.06	00				प्रवचनअनुलब्ध	NA
6	09.10.06	49				ब्रह्म निनि०एवं निष्प्रपंच है,श्रुति द्वारा जगत का अध्यास-अध्यारोप ब्रह्म निरूपण हेतु है,जगत प्रतीति मात्र माया है	Imp
7	10.10.06	46		कक्षा सा०		ईश्वर जगत का निमित्तोपादान कारण है । ब्रह्म-ईश्वर-जीव एकत्वम ।	Imp
8	10.10.06 [P]	30				वेद त्रिकाण्डमय है । कर्मकाण्ड से मल, उपासना से विक्षेप और ज्ञानकाण्ड से आवरण का निवारण हो जाता है	
9	12.09.06	41				जीवनमुक्त की गति, निद्रा/बुद्धि में प्रकट ईश्वर/जीव शक्ति व ब्रह्म शक्तिमान, चित्रगुप्त एवं धर्मराज का विधान	Imp
10	12.10.06	45				**ईश्वर जगत का निमित्तोपादान कारण है, सृष्टि के विभिन्नमत, चिदाभास का कूटस्थ से बाध समानाधिकरण**	Imp
11	13.09.06	43				**ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या,** ब्रह्म नित्य निर्विकार अनंत अद्वितीय है,ई०जीव जगत का एकत्व ज्ञान ही मुक्ति-मोक्ष है	Imp
12	14.09.06	45				ओम् भगवान से प्रकट हुआ उनका नाम एवं दुभाषिया है जो भगवान के निनि० व ससा०दोनों स्वरूप को बताता है	
13	14.09.06[P]	31				श्रुति का दृष्टि-सृष्टिवाद प्रतिपादन, राम चिन्तामणि और सीता त्रिगुणात्मयी हैं, शुद्ध वेदान्तिक दृष्टि	Imp
14	14.10.06	46				ओंकार का स्वरूप निरूपण ०० संपूर्ण ००	***
15	14.10.06[P]	27				कर्म-उपासना एवं नवधा भक्ति	
16	15.09.06[P]	28				नि०नि० राम का ये विश्व-विराट स०सा० स्वरूप है, विश्व सीताराम का ही स्वरूप है, सीता माता व राम पिता हैं	***
17	15.10.06	40				रामनाम का अर्थः ०र-अग्नि-पाप नाशक,अ-सूर्य-अज्ञान नाशक,म-चन्द्रमा-तीनों ताप नाशक ०राम महावाक्य हैः ०र-ईश्वर-तत,म-जीव-त्वम ,अ-एकत्वम-असि० तत्वमसि-महावाक्य है ०	*** ***
18	16.10.06	48				महोपनिषद-ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :-शुभिच्छा, विचारणा, तनमानसी, सत्वापत्ती, असनशक्ति, पदार्थाभावनी, तुरीयग्राह	Imp
19	16.10.06[P]	30				ब्रह्मका नि०नि० स्वरूप निरूपण, अवतार या स०सा० रूप धरने के कारण, व्यापक एवं प्रकट अग्नि का दृष्टान्त	Imp
20	17.10.06	44		Complete		चिदाभास की ७ अवस्थाऐं :-अज्ञान, आवरण, विक्षेप, परोक्ष ज्ञान, अपरोक्ष ज्ञान, दुःख निवृत्ति व अपार हर्ष प्राप्ति	
21	17.10.06[P]	24				माण्डूक्य उप ० : ओंकार ब्रह्म का सर्वश्रेष्ठ नाम, ओंकार का स्वरूप निरूपण	१
22	18.10.06	44				गीता १५/१ : संसार एक पीपल वृक्ष है जिसका मूल/बीज मैं हूँ **:: ब्रह्म का कारण-कार्यरूप से निरूपण ::**	
23	18.10.06[P]	29				माण्डूक्य उप ०ओंकार के चार चरण एवं उनका निरूपण	२
24	19.10.06[P]	29				माण्डूक्य उप ०	३
25	20.10.06[P]	30				माण्डूक्य उप ०	४
26	21.09.06	38				**ब्रह्म के स्वरूप और तटस्थ लक्षण** ० अवान्तरवाक्य ० महावाक्य	Imp
27	21.10.06[P]	31				माण्डूक्य उप ०म०राम का हनुमानजी को मुक्तोपनिषद में १०८ उप० का उपदेश **माण्डूक्य सर्वश्रेष्ठ उपनिषद**	५
28	22.09.06	37		कक्षा सा०		भगवान के ज्ञान का साधन त्रिकांडमय वेद है, स्थान में उत्तराखण्ड एवं त्रि०वेद में ज्ञानकाण्ड श्रेष्ठतम् है	Imp
29	22.10.06[P]	33				माण्डूक्य उप ०ओंकार का चतुष्पाद निरूपण एवं **संपूर्ण माण्डूक्य संक्षेप में** ।	६
30	24.09.06	53				ईश्वरऔर जीव का स्वरूप निरूपण एवं जीव-ईश्वर एकत्वम्, **अहं ब्रह्मास्मि** - स्वरूप का ज्ञान ही मोक्ष है	**
31	24.10.06	40				गीता२/१६,१७,१८ : सच्चिदानंद ब्रह्म अकर्म है सभी कर्म मायाकृत असत-जड-प्रकृति में हैं, **कर्म के पाँचअंग**	**
32	24.10.06[P]	39				ईशावास्य उपनिषद: यजुर्वेद-भाग१ शान्ति मंत्र एवं उसका अर्थ-ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदंपूर्णात् ---	1
33	25.09.06	52		कक्षा सा०		सामान्य एवं विशेष ज्ञान निरूपण, ईश्वर-जीव-माया का परस्पर संबन्ध और निरूपण	Imp
34	26.10.06	46				गीता२/१६-२१: असत् कभी है नहीं और सत् का कभी अभाव नहीं है, **ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या**	Imp